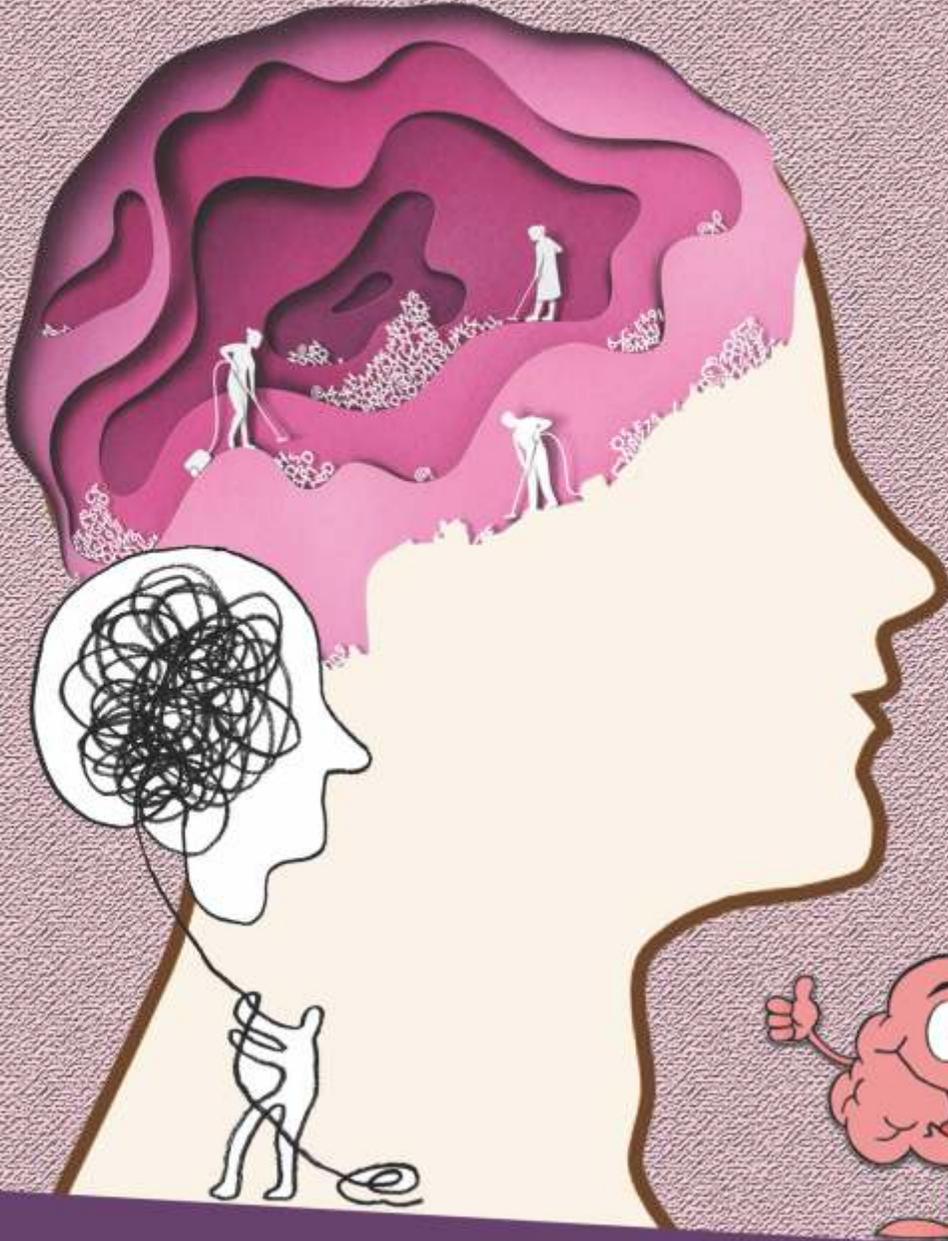


25<sup>th</sup> February 2019 Every Fortnight | English, Hindi & Gujarati



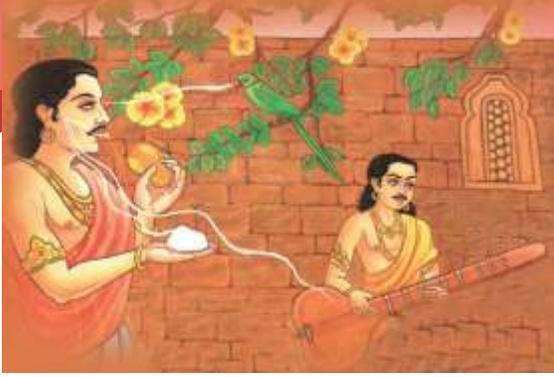
बुद्धि से शुद्धि  
शुद्धि से सिद्धि

# INDEX

Page 3-4	:	Types of Buddhi
Page 5-6	:	Autpatika Buddhi
Page 7	:	Benefits
Page 8-10	:	Vinayika Buddhi
Page 11	:	Alert Bell
Page 12	:	Karmika Buddhi
Page 13	:	Benefits
Page 14-16	:	Parinamika Buddhi
Page 17	:	Benefits
Page 18-19	:	Activity
Page 20	:	Bhaktamar



परमात्मा ने श्री नंदी सूत्र में मतिज्ञान की चार प्रकार की बुद्धि का विवेचन किया है  
In Shree NandiSutra, Parmatma has shown us four types of Matignan Buddhi



जो ज्ञान पाच इन्द्रिय और मन से प्राप्त होता है उसे मतिज्ञान कहते हैं।

The knowledge attained by 5 senses and mind is referred to as Matignan



मतिज्ञान के मुख्य दो प्रकार हैं  
१. श्रुतनिश्चित २. अश्रुतनिश्चित



Matignan is divided in 2 divisions.  
1. Shrutnishrit 2. Ashrutnishrit

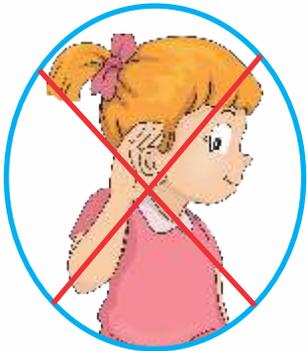


श्रुतनिश्चित

:- जो ज्ञान श्रुत, मतलब सुनने से प्रगट होता है उसे श्रुतनिश्चित ज्ञान कहते हैं।

Shrutnishrit

:- The knowledge that we obtain by merely listening is known as Shrutnishrit Gnan.



अश्रुतनिश्चित

:- जो ज्ञान बिना किसी स्वाध्याय के और बिना सुने प्रगट होता है उसे अश्रुतनिश्चित ज्ञान कहते हैं।

Ashrutnishrit

:- The knowledge that is obtained naturally without reading or learning and which cannot be taught is known as Ashrutnishrit.

परमात्मा ने अश्रुतनिश्चित के चार भेद बताए हैं  
Parmatma has shown us four types of Ashrutnishrit



औत्पातिका  
बुद्धि  
Autpatika  
Buddhi



वैनायिका  
बुद्धि  
Vainayika  
Buddhi



कार्मिका  
बुद्धि  
Karmika  
Buddhi



पारिणामिका  
बुद्धि  
Parinamika  
Buddhi



# औत्पातिका बुद्धि

(हाजर जवाबी बुद्धि)



जिस बुद्धि की प्राप्ति शास्त्र के अभ्यास के बिना प्रगट होती है, जिससे बहुत सुंदर सुझाव सुझे या तुरंत किसी भी बात का हल निकल जाए, दूसरों पर प्रभाव पड़े, राज्य में, समाज में, दोस्तों में सन्मान मिले, बुद्धिमानों में पूजनीय बन जाए ऐसी बुद्धि औत्पातिका बुद्धि कहलाती है।

The knowledge that is obtained without reading or learning the Scriptures. The knowledge which increases one's ability to give reasonable solutions or which helps one to come up with proper and easy solutions in times of crisis, the knowledge which helps to increase one's respect among friends, family or community is known as Autpatika Buddhi.



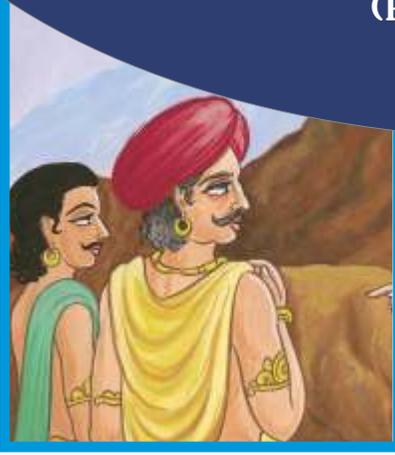
## Story

श्रेणीक राजा और अभयकुमार की कहानी बहुत प्रचलीत है। श्रेणीक राजा ने अपने प्रजाजनों की औत्पातिका बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए एक मुर्गा भेजा और कहाँ की इस मुर्गे को लड़ने लायक बनाना है परंतु शर्त थी की इसके सामने कोई दूसरा मुर्गा न हो और इसे मुर्गे से लड़ना सीखाओ।

To give an example of Autpatika Buddhi the story of Shrenik Raja and AbhayKumar is often told. Once upon a time, Shrenik Raja wanted to test the intelligence of his subjects. So he announced a challenge that the subjects had to teach and train a cock for a cockfight. The challenge lay in the condition that while training the cock, no other cock should be used and the cock should also learn to win a fight.

# Autpatika Buddhi

(Presence of Mind)



राजा की आज्ञा सुनकर ग्रामीण लोग धबरा गए। अभयकुमार नाम के एक व्यक्ति ने यह बात सुनकर सभी प्रजाजन को निश्चित रहने को कहाँ। अभयकुमार ने एक बड़ा और मजबूत दर्पण मंगवाया और मुर्गे को उसके सामने छोड़ दिया। दर्पण के प्रतिबिंब में वह दूसरा मुर्गा है ऐसा समझकर वह मुर्गा उससे लड़ने का प्रयत्न करने लगा। चार-पाँच दिन ऐसा चला। अंत में मुर्गा लड़ना सिख गया।

थोड़े दिनों के बाद ग्रामीण लोगों ने उस मुर्गे को राजा को सौंप दिया। यह देखकर राजा बहुत प्रसन्न हो गए की प्रजाजन परीक्षामें निरूपण हुए।

Everybody in the village was surprised and tensed at the same time. After all, how does one train a cock to fight without using another cock? was the question running through everyone's mind. A young man, named AbhayKumar came to rescue. He first calmed the villagers and then called for a big and thick mirror. He left the mirror near the cock. Every time the cock saw his reflection in the mirror, he assumed it was another cock and went on to fight with it. In this way, in a few days the cock learnt to fight without the help of another cock!

Once the cock was completely trained, the villagers returned it to the king. The king tested the villagers and was very happy that his condition was fulfilled and was in high praise for AbhayKumar.

जो व्यक्ति किसी भी मुसीबत का हल और गंभीर प्रश्न का समाधान तुरंत निकाल ले वह औत्पत्तिका बुद्धिवाले व्यक्ति कहलाते हैं।

The person who can rise to the occasion in times of need and can help to solve any problem with ease is said to have been blessed with a high presence of mind.

# Benefits



१) ऐसी व्यक्ति को कोई भी मुश्किल परिस्थिति में मार्ग मिल जाता है।

1) You will get solution to any difficult situation.



३) हर किसी को मददरूप हो सकते हैं।

3) One can be helpful to everyone



२) ऐसी व्यक्ति विपत्ति के समय में लोगों को या संपत्ति आदि को बचा सकते हैं।

2) During calamities you will be able to save people's lives and their belongings.



४) ऐसी व्यक्ति के साथ कोई विश्वासघात नहीं कर सकता।

4) No one will be able to cheat you.

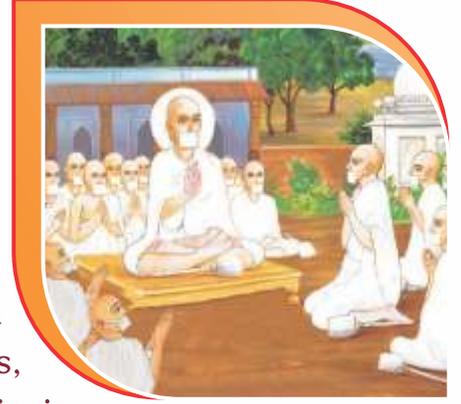
# वैनयिका बुद्धि

## Vainayika Buddhi



विनय करने से जो बुद्धि खिल उठती है उसे वैनयिका बुद्धि कहते हैं। माता-पिता, गुरु, आचार्य आदि का विनय-भक्ति करने से जो बुद्धि प्राप्त होती है उसे वैनयिका बुद्धि कहते हैं।

The knowledge gained due to humbleness or respectful behaviour is known as Vainayika Buddhi. Respectful behaviour towards parents, Guru, Acharya, teachers etc... help us to gain is Vainayika Buddhi.



### Story

**कथा :** एक नगर में एक सिद्ध पुरुष रहते थे, उनके दो शिष्य थे। गुरु उनके दोनों शिष्यों को एक समान पढ़ाते थे। परंतु उनमें से एक शिष्य विनयवान था और दूसरा शिष्य अविनित था। प्रमाद के कारण गुरु के पढ़ाये गए विषयों पर अविनित शिष्य मनन-चिंतन नहीं करता था।

इसलिए उनका अध्ययन अपूर्ण और दोष पूर्ण रह गया। जबकि विनित शिष्य सर्वगुण संपन्न और शास्त्रों में पारंगत बनता गया।

In a town, there was once a very knowledgeable Guru who had two shishya. Guru taught both his shishya equally. One of the two shishya was humble and courteous, the other was very disrespectful and proud person. Due to his pride, the disrespectful student would not revise what was taught by the Guru, hence his work would be shabby and incomplete. On the other hand the courteous disciple would regularly revise and complete his homework due to which he mastered the Shastras very well and soon became an expert.

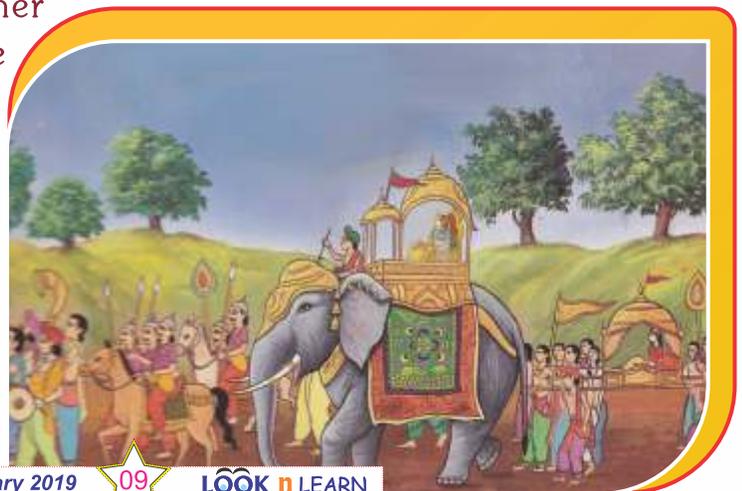


एक दिन गुरु की आज्ञा से दोनों शिष्य एक गाँव जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने बड़े बड़े पैरों के निशान देखें। अविनित शिष्य ने अपने गुरु भाई से कहाँ की, यह निशान किसी हाथी का है। परंतु विनित शिष्य ने कहाँ कि... नहीं यह निशान हाथी के नहीं, हथनी के है। यह हथनी अपने बायी आँख से अंधी होगी और उसके उपर कोई रानी सवार होंगी। वह रानी सौभाग्यशाली और गर्भवती भी होगी। थोड़े दिनों में वह पुत्र को जन्म देगी। सिर्फ पैरों के निशान देखकर कोई इतनी सारी बातें कैसे कह सकता है?

One day, as per Guru aagna , the shishya were going to a village for some work. On the way, they saw large footprints. Seeing the footprints the proud student boosted to his friends that these footprints were of a male elephant. The humble student however disagreed to this and said these were the footprints of a female elephant who is blind from the left eye. She must be carrying a pregnant queen who will give birth to a son in a few days. How can my fellow student know so much just by looking at the footprints?

अविनित शिष्य को बहुत आश्चर्य हुआ। गुरुजी के पास पहुँचने पर विनित शिष्य ने अपने गुरु को शुभ भाव से चरणों में झुककर वंदना की। जबकि अविनित शिष्य बिना वंदना किए क्रोध में वहाँ खड़ा रहा। अपने गुरु के पास भाई की कही हुई सारी बातें सत्य साबित होने पर अविनित शिष्य बहुत क्रोधीत हुआ और सोचने लगा की यह सब गुरुदेव के पक्षपात का कारण है। उसे लग रहा था कि गुरुजी ने उसे दिल से ज्ञान नहीं दिया।

The proud student was astonished at these revelations. On reaching back to their Guru, the humbled Shishya did vandana with shubh bhaav . On the other hand, the proud Shishya stood angrily without doing vandana. He thought Surely, the teacher must have taught him more than me. He became angry towards the teacher because of such partiality. He assumed that the teacher had not imparted proper knowledge to him and had taught only to his fellow shishya.



गुरुजी ने विनित शिष्य से कारण पूछने पर शिष्य ने जवाब दिया की, रास्ते में जिस प्राणी ने मूत्र किया था उससे पता चलता है की वह हथनी थी। उस हथनी ने रास्ते के दाए बाजु के पेड़ के पत्ते खाए हुए थे और बाए बाजु के पेड़ के पत्ते नहीं खाए थे। इससे पता चलता है की वह प्राणी दायी आँख से देख सकता है और बायी आँख से नहीं देख सकता। बहुत सारे जन समुदाय के बीच में से पसार हो रहे थे इसलिए जाना की राजकीय सवारी होगी। रानी के पैरों के निशान देखकर यह जाना की उनके दाए पैरों के निशान की आकृति भारी थी इससे यह मालूम होता है रानी गर्भवती होंगी। पेड़ पर लाल रेशमी धागा फँसा हुआ देखकर यह मालूम होता है की रानी सौभाग्यवती है।



The Guru asked the reason behind the answer. The respectful shishya replied, "I understood these things by applying your teachings. The smell of the urine on our way told me that it was a female elephant." The leaves of the trees on right were eaten but those on the left were untouched which implied that she (elephant) must be blind in the left eye. There were many human footprints on the way along with elephant's footprints which showed that it must have been a royal procession. A piece of red silken thread hung from a leaf of a tree which meant that it must be a queen whose husband is alive. When I further found the footprints of the queen, the left footprint was more prominent than the right one. This showed that the queen was pregnant. This is how I could depict the whole incident.



शिष्य की यह बातें सुनकर गुरुजी बहुत प्रसन्न हुए और कहाँ की विनित शिष्य ने अपने ज्ञान का बहुत अच्छी तरह से सदुपयोग किया है।

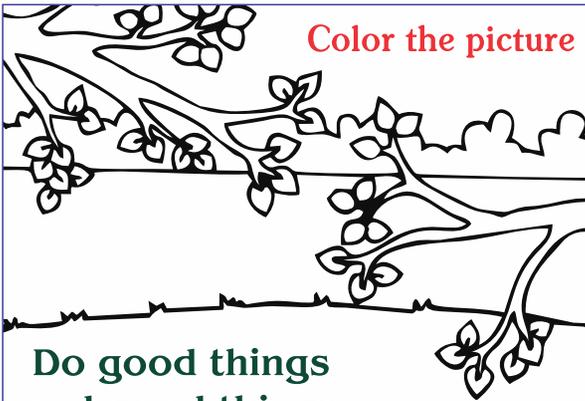
The Guru was pleased about how his student had recollected his teachings and applied it to understand the whole scene.

Discipline is the bridge between goals and accomplishment



Self-Discipline is a key ingredient to Success

Color the picture



Do good things and good things will happen for you...



Alert Bell

March 2019

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
4	5	6	7	1	2	3
11	12	13	14	8	9	10
18	19	20	21	15	16	17
25	26	27	28	22	23	24
				29	30	31

The auspicious days

21 - No Holi day!

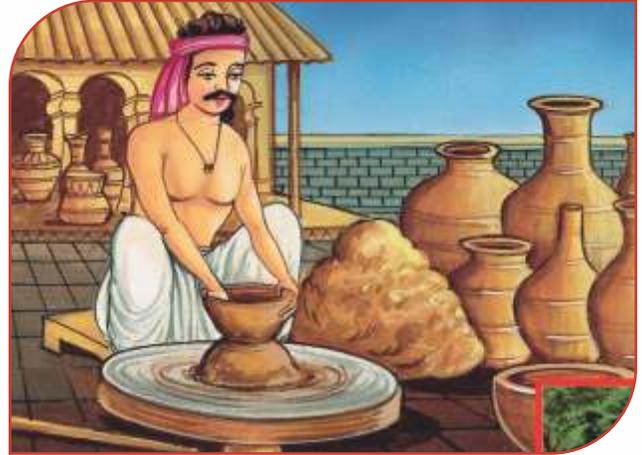
- - Beej
- - Pacham
- - Aatham
- - Aagiqaras
- - Pakhi



Lets follow Tithi

जो बुद्धि कर्म करते करते आती है... उसे कार्मिका बुद्धि कहते हैं।

The knowledge that is obtained by doing work is known as "Karmika Buddhi".



## Example

जो बुद्धि कार्य करते आ जाए उसे कार्मिका बुद्धि कहा जाता है।

उदा. कोई चित्रकार चित्र बनाते बनाते चित्र बनाने की कला में महारथ हासिल कर लेता है। कोई खिलौना बनाने वाला अपना मनपसंद खिलौना खिलौने-खिलौने उस खिलौने में प्रविण बन जाता है।

ऐसी ही कोई भी कार्य करते-करते उस काम में कुशलता प्राप्त हो जाए उसे कार्मिका बुद्धि कहा जाता है।

Karmika Buddhi is proficiency coming from mastering a technique.

For Eg. A painter improves his skills of painting and creation each day with practice. A sports person practices each day and masters the game.

Practice leads to perfection. This is Karmika Buddhi.



# “कार्मिका बुद्धि” के फायदे

# Benefits of “Karmika Buddhi”

1

कोई भी कार्य  
श्रेष्ठ होता है।

All work is done  
properly.

2

दोस्तों, परिवारजनों,  
संबंधियों में  
प्रतिष्ठा बढ़ती है।

Everyone respects  
you for your work.

3

लोगों से मान-सन्मान  
मिलता है। खुद के ज्ञान  
खिलाने के साथ अन्य को  
भी ज्ञान दे सकते हैं।

The knowledge  
obtained by doing  
so also helps to teach  
others.

समाज में जरूरतमंदों  
को मदद कर सकते हैं।

You can help the  
needy in the society.

4

किसी पर निर्भर न  
बनकर स्वावलंबी बनते हैं।

You become  
independent in your  
area of work and  
you can excel at it too.

5



## पारिणामिका बुद्धि - Parinamika Buddhi

आयुष्य के बढ़ने से और अनुभव से जो बुद्धि प्राप्त होती है उसे पारिणामिका बुद्धि कहते हैं। जैसे की, परिवार में जब कोई समस्या आ जाए तो सर्व प्रथम हम अपने बुजुर्गों के पास जाते हैं। इसका कारण क्या है? क्योंकि उनके पास हम से ज्यादा ज्ञान और अनुभव है जिससे वे हमारी समस्या का समाधान निकाल सकते हैं।



The knowledge obtained with growing age and experience is called Parinamika Buddhi. For instance when there is a challenging situation in the family, we tend to ask elders for advice. This is so because they have more experience and more knowledge than us and they can give us better solutions.



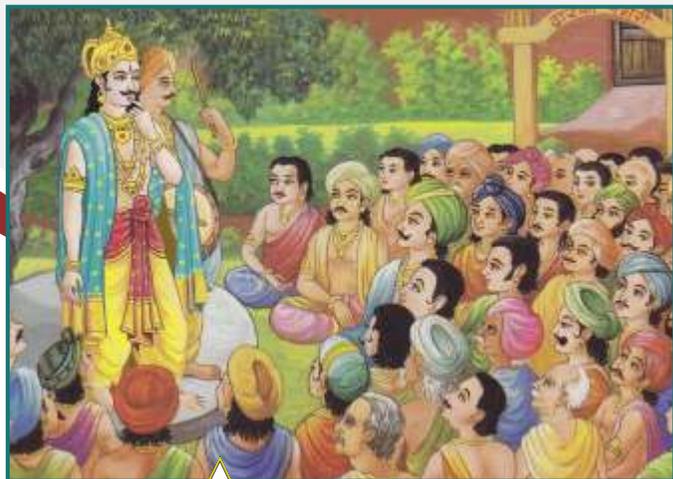
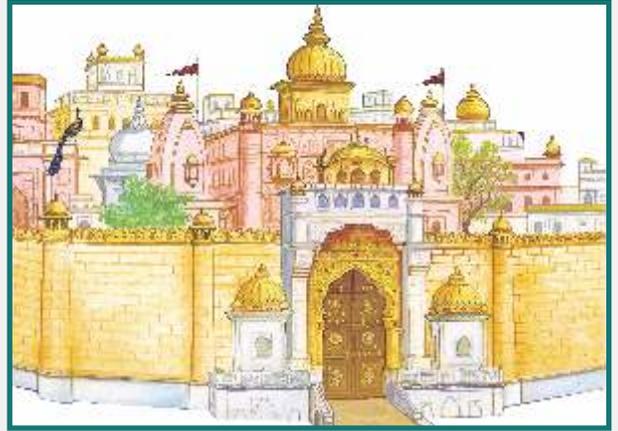
कई सालों पहले एक युवान राजा थे। कुछ युवकों ने उन्हें सलाह दी कि उनके सभी मंत्री भी युवान होने चाहिए क्योंकि युवान ही वृद्धों से अधिक कार्यशील होते हैं।

इनकी इस बात को साबित करने के लिए राजा ने परिक्षा लेने का निर्णय किया। राजा ने युवानों से पूछा कि जो व्यक्ति राजा के सिर पर प्रहार करे उसे क्या सजा देनी चाहिए।

युवानों ने कहा कि उसे मृत्युदंड देना चाहिए। जबकि अनुभवी वृद्धों ने कहा कि ऐसे व्यक्ति को प्रेम करना चाहिए। उनका यह जवाब सुनकर युवानों को क्रोध आ गया।

Once upon a time there was a young King. Few youngsters suggested the King that his ministers should be young because they are more efficient than elders.

To justify them, the King decided to test them. King asked those youngsters, what punishment should be given to the person who hits me with his legs. Youngsters claimed that he should be sentenced to death, whereas experienced ministers, said that he should be loved. Listening to this solution, the youngsters got angry.



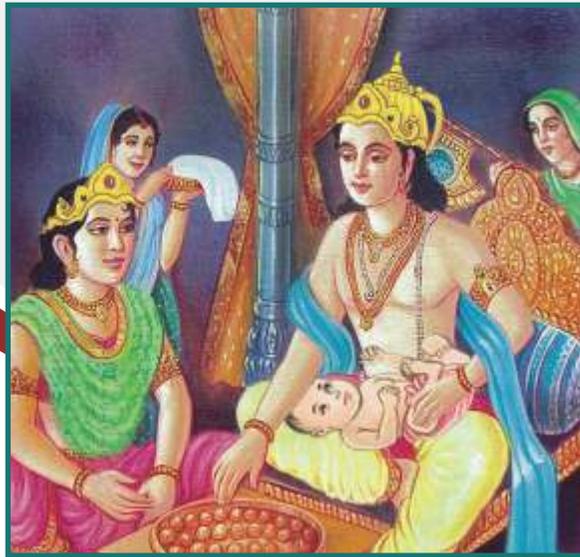
राजा ने युवानों को शांत किया और अनुभवी वृद्धों को अपनी बात स्पष्ट करने के लिए कहा। अनुभवी वृद्धों ने सफाई देते हुए कहा कि सिर्फ राजकुमार ही अपने नन्हें पैरों से राजा के सिर पर वार कर सकते हैं और राजकुमार को इस कार्य के लिए दंड नहीं दे सकते। अनुभवी वृद्धों को सुनकर युवान लज्जित हो गए। राजा ने खुश होकर उनका सम्मान किया और उन्हें ही मंत्री बनाया ।

King instructed youngsters to cool down and asked the experienced ministers to justify their solution. Experienced ministers clarified that only Prince can have courage to hit the King's forehead with his tiny legs and Prince cannot be punished for his such a deed. Listening to experienced minister's solution, youngsters were ashamed. King happily greeted them and appointed them as ministers.



इस कथा से यह साबित होता है कि राजकार्य में शारीरिक बल से ज्यादा बुद्धि की आवश्यकता होती है ।

This instance depicts that mental capability is more essential than physical fitness to rule a kingdom smoothly.



# पारिणामिका बुद्धि के फायदे

## Benefits of Parinamika Buddhi



1

स्वयं का और दूसरों का  
भला कर सकते हैं। किसीका  
जीवन सुधार सकते हैं

Can help to improve his own  
life and can also help  
in improving other's  
lives too

2



दूसरों का जीवन सुधारने से  
खुद का पुण्य बढ़ता है

Can earn Punya  
by helping others to  
improve their lives



4

किसीके साथ अनहोनी होने  
से बचा सकते हैं

Can help to save someone  
from any unpleasant  
disaster



3

दूसरों को सत्य मार्ग पर लाने  
से भद्रपुण्य कर्म का बंध होता है।  
(अगले भव में जैन धर्म प्राप्त होता है)

By inspiring other's to follow the  
right path one can help in  
increasing one's Bhadrupaya  
Karma (Karma that helps us  
to acquire Jainism  
in next birth)



# Match Pictures with Buddhi's Name

औत्पातिका बुद्धि  
Autpatika Buddhi



वैनयिका बुद्धि  
Vinayika Buddhi

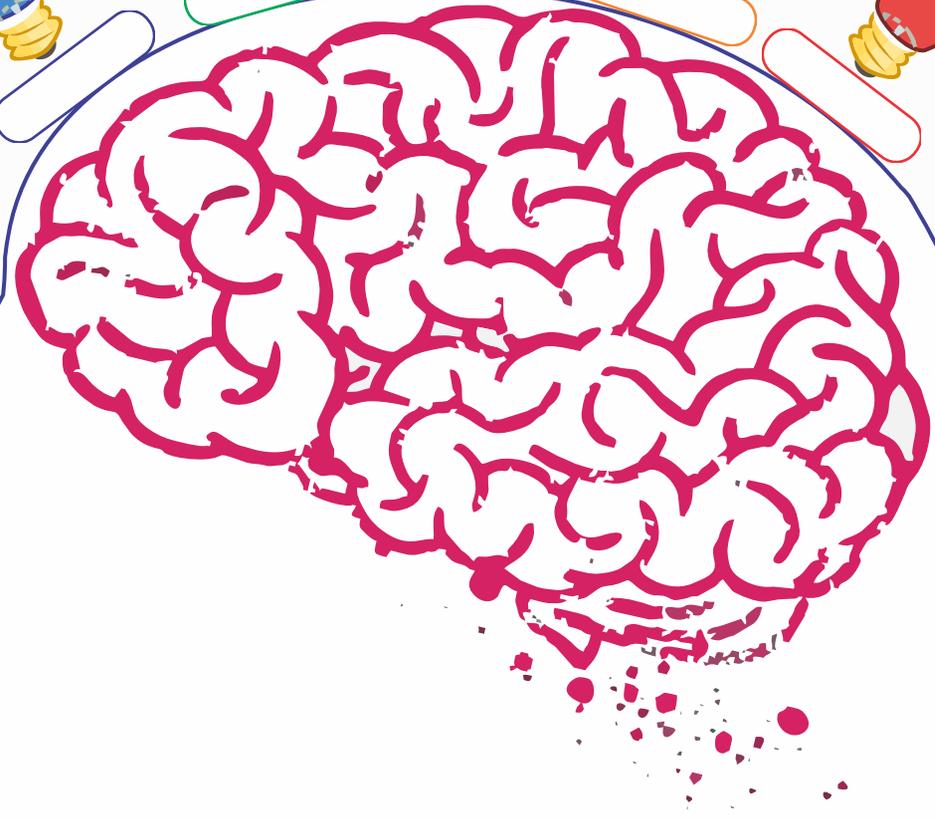


पारिणामिका बुद्धि  
Parinamika Buddhi



कार्मिका बुद्धि  
Karmika Buddhi





Help Pinku identify  
the pictures  
and write Buddhi's name

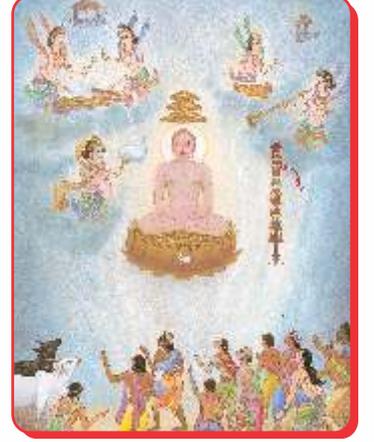


# भक्तामर गाथा

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभाग, रत्नैलोक्य-लोक-शुभ-सङ्गम भूतिदक्षः।  
सद्गुरुमराजजयघोषण-घोषकः सन्, रवे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी॥३२॥

## अर्थ

गम्भीर और उच्च शब्द से दिशाओं को गुञ्जायमान करने वाला, तीन लोक के जीवों को शुभ विभूति प्राप्त कराने में समर्थ और समीचीन जैन धर्म के स्वामी की जय घोषणा करने वाला दुन्दुभि वाद्य आपके यश का गान करता हुआ आकाश में शब्द करता है।



## शब्दार्थ



गम्भीर	: गम्भीर	दक्षः	: कुशल
तार-रव-पूरित	: उच्च शब्द से	घोषक	: घोषित करने वाला
दिग्विभाग	: दिशाओं को	सन्	: हुआ
रत्नैलोक्य	: तीन लोक के	रवे	: आकाश में
लोक	: जीवों को	दुन्दुभिर्	: दुन्दुभि वाद्य
शुभ	: शुभ	ध्वनति	: शब्द करता है
संगम	: समागम की	ते	: आपके
भूति-विभूति	: देने में	यशसः	: यश को
सद्गुरुम-राज	: तीर्थकर देव को	प्रवादी	: सब और कोलाहल करता
जय-घोषण	: जय घोषणा को		

देव दुन्दुभी स्तम्भक